

१२५ म १४ स नाने सा ५ स मे स २२
दि ११ सा ५ २५

3199

आर्य समाज
मुंबई

गा हायु

पूजा एव

र श्रीजगदम्बायै नमः ॥ ॥ अथ स्नानविधिः ॥ प्राप्ति य ३ ॥
गलगुणमूलनमस्कान ॥ या लो याम ॥ न्यास ॥ ॥ वृक्ष
ग्रंथि च्छि य ॥ ज्वं वृक्षसूर्यदर्शवृक्षसंगं विष्णु निव सं धा ॥
कृत्तिनामसंहया वि। कं नवधं कना म्मा हं ॥ नि अ वज क ॥
डि विवक्षयं अल निखा वं धं क न र र्दं रु द्वा हा ॥ ॥

१ संकल्प १

जलसगिका वाकचायगी धावाहन ॥ क्रोधकं जिकुणमदान ॥
जलसगधन ॥ लें वें नें यं हं सें ॥ ३॥ रधन मूडा ॥ गाउगुय
दिगवंधन ॥ ॥ मूलम ॥ लुनया निमूदान हाय ॥ घनः
जुः आधन ॥ ॥ क्रोः लिरन ॥ श्रीः नासि ॥ कुः ॥ श्रीः सि
न ॥ ॥ जूय ॥ ॥ जूय हं सें हं श्री कृदिकध्व ॥ १ न कृदि
कध्वनी अचनमः ॥ ॥ अय ॥ आचमन ॥ मालहय ॥ वमु

दिलंखहाय ॥ रुद्रधकं ॥ क्रुद्रयः धवनिहित ॥ ॥ निहाने ॥
॥ ॥ अथविह निधनलं ॥ आचन ॥ गलागुन मूलनमंका
नयाणायास ॥ न्यास ॥ विहति कायावः कयाल संतरका
य ॥ ॥ लंखगायः ॥ रुद्रधकं ॥ ॥ क्रुद्रय ॥ ॥ जूय हं सें हं क मलवनय
कनकनकदिकदं रुद्रहाहा ॥ ॥ गिका वाकचाय ॥ ॥ दयस

विष्णु पूजा ॥ प्रयांजलि ॥ ॐ श्रीं सुः नाना यत्ना यनमः ॥ ३ ॥ ॐ
दं वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ निव पूजा ॥ प्रयांजलि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सुः
सदा निवा यनमः ॥ ३ ॥ ॐ दं वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ अथ ॥
ॐ कां कीं सुः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ कीं सुः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सुः स्वाहा ॥
१ ॥ अथ समर्थ ॥ ॐ दं अथ गृहाण स्वाहा ॥ ॥ मधुलक्ष्मणं ॥

गुह्या नमः ॥ ॐ नमस्तु शुभनाधीन नरलजगत्त्रयक ॥ दि
ननाथ गिलाक गत्रक मां सर्व सर्वदा ॥ विष्णु प्रियुवनं ग
नं नमानाथं जगत्प्रभु ॥ नमामि नगदं दं दहि मे मनसं य
सिगं ॥ निव निव क नं नं निवात्मानं निवारु मे ॥ निव मा
ग्न्युखमात्रं पुन मासि सदा निव ॥ ति न्नि न विरधी गत्स

वेमनिधुर्लु मस्तु ॥ नमस्तु ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन हाय ॥ ज
 धनमि य ॥ मस्तु लयान कायाव कृ य ॥ ॥ ज्योतिष कथदा
 वगन ॥ ॥ सुय्यादि य क स्त ॥ ॥ मुखवा ड ॥ संहनम डो क
 न ॥ ॥ ज्योतिष न ३ ॥ ॥ स्तान कायाव कृ य ॥ नमु द वा य ॥ ॥
 मिलि ज्ञा ज्ञन ॥ ॥ नमः कृ डि का ये ॥ माल का गल ना च क

गहाष्ट वा च स्तान ग य ॥ नमः ध कं ॥ ॥ ना सिय ॥ ज्योतिषा लंखन
 त्वा य स्तान ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥
 ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥
 यजु र्यनमः ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥
 लुल य कं पूजा ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥ ॥ ज्योतिषा लंखन त्वा य स्तान ॥

दक्षिण नसाधिपः चलेन कलकलमचलेही इ इ इ स्वाहा गा उ गु य दिगवंध ३

न्यामः ॥ ग ल गु न म ल न म स्का नः ॥ त्रिं ग र व म्भ य न मः ॥ ख व
स ॥ त्रिं गु न त्या न मः ॥ अ व स ॥ त्रिं अ रु स ग म ल व न यू स रु ग
म ल व न यू वी ख व द व ता य न मः ॥ द थ स ॥ ॥ आ ल म आ
म ॥ अ १० अ व नि अ ॥ न १० न पा नि य ॥ व १० अ व गा व न ॥
व थ न रु स स व य ॥ उं अ म्ना य रु ॥ ह सें अं गु म्ना यो न

आस म न य ॥ त्रिं व घ्रा स ना य न मः ॥ त्रिं य ग्रा स ना य न मः ॥ त्रिं ह्मो स ना य न मः ॥ थ १ म

ज व र व अ न क २ गा न न ॥ उं अ म्ना य रु ॥ व ज म रु द म्ना य क या ल म प्र का व ना य

मः ॥ क मं ग रु नी त्या स्वा हा ॥ ल्वं म ध्वा मा त्या व ष द् ॥ नं अ ना
मि का त्या रुं ॥ यं क नि म्ना त्या वी ष द् ॥ उं क न ग न यु म्ना त्या
अ म्ना य रु ॥ ह सें ह द या य न मः ॥ क मं नि व स स्वा हा ॥
ल्वं नि र वा य व ष द् ॥ नं क व या य रुं ॥ यं न गु गु या य वी ष द् ॥
उं अ म्ना य रु ३ ॥ ॥ हं नि र वा त्या न न मः ॥ हं नि व स न मः

हं नं नं वी नं नं स्वाहा ॥

कैत्रनाथ नमः ॥ मंमस्वनमः ॥ लक्ष्म्याय नमः ॥ वंताहिस्था
नमः ॥ नंगुष्ठास्थानं नमः ॥ यज्ञान्स्थानं नमः ॥ दुःपाइकला
नमः ॥ मूलनमः ॥ ॥ अर्घ्यायूजा ॥ जाह्नदयादि ॥ वेव
दनाकृतयस्थानं नमः ॥ १४ नमः ॥ दाः गाउग्रयदिगवंधनं ॥ रु
दधकं ॥ धलंस्वनः देवः पूजाएतः धर्महाय ॥ ॥ गंस्वस्था

यने ॥ वंसयूजा ॥ दीआधानगकादित्यानमः ॥ गंस्वमिल
रुदधकं ॥ लंस्वमय ॥ हसोः धकं ॥ वंदनाकृतय ॥ नमः ॥
धकं ॥ ॥ अंकगमूजानतीर्थवाहनं ॥ कोधकं ॥ जयनय ॥ वे
उ ॥ गंस्वमूजामूजागाउग्रयदिगवंधन ॥ धलंस्वनदेवः पू
जाएतः धर्महाय ॥ ॥ मालसातीर्थः नेवृशरगंधन ॥ ॥

ASHA ARCHIVES
ગાથા : ગોસ્વામી

૩૧૧૧

૪૧૬. ૪૧૬

૪૧૬. ૪૧૬

॥ ગોસ્વામીજીનાં શ્રીગુરુનામ સમૃદ્ધિપ્રદાન કરી આપણને
શ્રીગુરુનામ સમૃદ્ધિપ્રદાન કરી આપણને ॥

શ્રીગુરુનામ સમૃદ્ધિપ્રદાન કરી આપણને
શ્રીગુરુનામ સમૃદ્ધિપ્રદાન કરી આપણને ॥

ASHA ARCHIVES
श्रीम. वि. वि.

3199

श्री वि. वि.

श्री वि. वि.

श्री वि. वि.

श्री वि. वि.

यागस्था धनं ॥ वंसपूजा ॥ कीं आधवन कस्तूरिस्थानमः ॥ रु
द्रधकं सिलं ॥ पूजा ॥ अस्मै मलुलाय नमः ॥ ॥ गीर्थगय ॥ वे
जहं संलेखी पागं धूत आनिनमः ॥ लुद्धिगं ॥ पूजा ॥ विं सहा म
मलुलाय नमः ॥ ॥ गिरूठ मज्ञानः पागस विक्क ववाय ॥ उ
कीं कीं दू रूद्र स्वाहा ॥ ॥ पूजा ॥ सां द दयादि स्थानमः ॥

नैवन्द नाशग यष्यं नमः ॥ ॥ मूलनरभन ॥ दू र अवगुं
धन ॥ रधन मज्ञा ॥ यानि मज्ञा ॥ ता उग्रय दिग वं धनं ॥ ॥ रु
गलुद्धि ॥ नैव आधवन ॥ कीं ॥ लिंग ॥ श्रीं ॥ नाति ॥ दू र दि ॥
कीं ॥ निव ॥ कीं ॥ निव ॥ दू र दि ॥ श्रीं ॥ नाति ॥ कीं ॥ लिंग ॥
नैव आधवन ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ अर्धाया लं खन हाय ॥ वन्दना

दिनमि अ॥ जे आत्मन वंदन नमः॥ थरं थें सिंदूरः अकृता
यथा॥ पूजा॥ जे अहं ले मं ले आत्मन ग्रीपाइ कां पूज या मिन मः॥
॥ गुन ग र्थ वं॥ जे स्वाहा ग्री गुन र्था ग्री पाइ कां ग र्थ या मिन
मः॥ ॥ यं व व लि॥ जे वां वं क ना था य व लि गृ द्वा स्वाहा॥ जे कां
कृ पा ला य व लि गृ र स्वाहा॥ जे यां या गि नी त्या व लि गृ द्वा गृ

द्वा स्वाहा॥ जे वां वा मू लु य व लि गृ द्वा र स्वाहा॥ जे गं ग ल प त य
व लि गृ द्वा र॥ मू डा क नं ग ऊ ती दं ड या नि का ड ग ऊ वि न्द्र॥
द व स्वा नं थि या व न य॥ आ वा ह नं॥ जे अ हं ले मं ले ग्री स्वं द व
गा न् हा वा ह या मिन मः॥ ॥ प्रि द व पू जा॥ जे कां कृ पा ला य
नमः॥ जे वां वं क ना था य न मः॥ जे गं ग ल प त य न मः॥ व लि॥

दधुः तर्जनी गज मूद्रा ॥ विन्द ॥ ॐ ह्रीं श्री वायू ॥ नवात्मा पूजा ॥
त्रैलोक्यनाथ नमः ॥ ॐ अहं ऐसं ऐ श्री नवात्मा रत्न कक्षी वा
पूजा ॥ ३ ॥ ॐ वलिंगु न्ना स्वाहा ॥ आनिमद्रा ॥ कमपूजा ॥
यैवयुता सनाय नमः ॥ ॐ गवा सनाय नमः ॥ ॐ स्वाहा वक्रि प्रता
सनाय नमः ॥ ॐ अहं ऐसं ऐ श्री अक्ष विंल गि क्रम निवर्ण क्रि रः

दान कक्षी वायू ॥ वलिः आनिमद्रा ॥ मूल पूजा ॥ अमन ॥ ॐ
वृषा सनाय नमः ॥ ॐ सिंह सनाय नमः ॥ अर्धासिः कः स्वाः ॥
कनः थूदा वगय ॥ ॐ अवाहना दिवन्दना कनः अंनमः ॥ याथा
दि ॥ अर्धाया लगय ॥ ॐ प्रगत्या अंनमः ॥ लं स्वया ॥ ॐ द म धं
नमः ॥ अर्धाया ॥ ॐ द मा च म नी अंनमः ॥ लं स्वया ॥ ॐ दं

स्नानीयं नमः ॥ चन्दनादिकाय ॥ चैवंदने नमः ॥ धरथे ॥ सिंद्
नः ॥ जगत् ॥ पूषा ॥ धूमः ॥ दीपः ॥ नेव श ॥ ॥ नव्यनं ॥ उं ॥ हृत्
सं ॥ श्रीकृत्तिकं ॥ नृत्तिकं ॥ श्रीग्रीहानकं ॥ श्रीपादकां ॥ नव्यया
मिनमः ॥ ॥ ॥ अथायातं खनय ॥ उं ॥ दमावनीयं नमः ॥ ॥
यथां जति ॥ उं ॥ श्रीकुं ॥ हं ॥ सकुमलवनयूं ॥ सहकमलव

नयूं ॥ श्रीकृत्तिकं ॥ नृत्तिकं ॥ श्रीग्रीहानकं ॥ श्रीपादकां ॥ पूजयामि
हो ॥ सह ॥ श्रीजीवो ॥ वलि ॥ उं ॥ दं ॥ वलिं ॥ गृह्णाह ॥ विभूत
यानिमदा ॥ ॥ श्रीकृत्तिकं ॥ पूजा ॥ विवृषासनाय नमः ॥ उं ॥ सिंहा
सनाय नमः ॥ यथां जति ॥ उं ॥ हं ॥ सह ॥ श्रीकृत्तिकं ॥ यत्नं ॥ कि
संदिगाय श्रीपादकां पूजयामि नमः ॥ ॥ वलिः ॥ मद्रा ॥ ॥

लक्ष्मी पूजा ॥ हूं प्रणामनायनमः ॥ श्री सिद्धि ध्वजतदात्रकथायू
॥ प्रयांजलि ॥ उं उं उं उं उं श्री सिद्धिलक्ष्मी देवि श्री यायू ॥
वलि मूडा ॥ ॥ सुन्दरि ॥ उं उं पूजा ॥ उं श्री सदानिवप्रणाम
नायनमः ॥ प्रियांजलि ॥ उं श्री सौः श्री नहा प्रिये न सुन्दरि देवि श्री या
यू ॥ वलि मूडा ॥ ॥ नाट ध्वज पूजा ॥ प्रयांजलि ॥ उं वृषासनायनमः ॥

३ उं श्री उग्रवधु श्री यायू ॥ ३ ॥ वनि मूडा
उं उं हरे श्री नृसिंहे नायनमः ॥ नृसिंहे श्री नकि सहिता मन्त्री
यायू ॥ वलि मूडा ॥ ॥ उं नन्दिन नमः ॥ उं महाकालाय
नमः ॥ वलि मूडा ॥ ॥ वलि मूल ॥ उं कां कृष्णालादिष्टाव
लिङ्गं कृष्णाला ॥ उं महाकनवी नमः ॥ नमः ॥ वलि मूल ॥
उं सर्वेष्टा देवता हस्त प्रम पिता वय कृष्णालादिष्टा
॥ २ ॥

कृवाहिनीत्यावलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ उं स म स्तु म नु यी वं यी ॥ १० ॥
 ययी वं स न्दा हा य स न्दा रु दि वा सि द्वि स म य च क या पू व लि गृ
 ह्ण २ स्वाहा ॥ उं उं का नू क य लिं वि रु त् स वं नू ह द या य न मः
 व लि गृ ह्ण २ स्वाहा ॥ च न्द ना दि ग व लि स ॥ उं च न्द ना क त य
 धा न मः ॥ ॥ अ य ॥ अ र्धा या लं ख न मा ला स हा य ॥ रु द् ॥

३ उं ह स रु स्वाहा ॥ १० ॥

अं स्वां ग यः न मः ॥ पू जा ॥ उं की अ रु मा ला ये न मः ॥ उं अ रु रे
 स रे स्वाहा ॥ १० ॥ रु स्वाहा ॥ १० ॥ उं की मीः स्वाहा ॥ १० ॥ उं
 रु रु रे स रे ॥ १० ॥ अ र्धा सं ख सः क थ रु व ग न ॥ उं रु रु रु
 प रु हा ल स्वाहा ॥ ॥ म धु ल सा य ॥ उं गु न र्था न मः ॥ उं
 का ना स न मा नू र्वा व द्र य धा प नि मि तां ॥ षट् शु का न ग ता द वि ध

ह्रिकानमाम्यहं ॥ अथ दार्ढ्यवता । न क्रियते निर्बलदायिनी
इः स्वहानित्या सिद्धितन्त्री नमाम्यहं ॥ यत्र मानन्दसंयाह
युमाह गवनिर्गवः ॥ इः स्वयं यथविज्ञानवदनं याहि मां निव
माधुर्वर्गमहर्गमं वाक्काव्यकृत्स्नविर्वा । स नमस्त्यमनाज्ञा
दं ह आमि मग्नं ध्रुवं ॥ अथ गारुडसहस्राविक्रियकहनिर्वी

संमया । दासाह निगिमां मत्वा कृमस्त्यत्र मंश्वनि । जैजस्म
नित्या च न विरक्षो गत्सर्वय निष्कृष्टममु ॥ या निद्रान नमस्त्या
न ॥ ॥ विन्दुगर्भ ॥ जैनमः श्रीनोथाय ॥ जैनमः सिद्धिनाथा
य ॥ जैनमः कृजगनाय ॥ श्री श्रीपादकागर्भ्यामिनमः ॥ ॥
दवः वलिः यागः धवगिलसकन ॥ ॥ ककाकावनमुदं

वलि सगय ॥ अर्घ्य संखया लेख न हाय ॥ चयन निष्य ॥
मल्लुलेशा दव हान क य ॥ कः अमुक रु द ॥ यादि न्या सः ॥
वलि विमर्जन ॥ कः अमुक रु द ॥ अर्घ्य पात्र स थ द व थ
वक्ष्य स पि था व ग य ॥ ॥ अर्घ्य मालीन ॥ यानि म द्रा ग द व थि य
क थ व द दिस थि य क ॥ कः द द या य न मः ॥ ॥ रु द रु त

उग्र य ॥ नाथ ग कः रु द ३ ॥ सं हान म द्रानः द व या हान क या व
द दि ॥ निल स थि य कः न रु द ॥ वलि सगय ॥ ॥ अर्घ्य संख
या गु या लेख वलि सगय ॥ ॥ आवन ॥ धल मल्लुल र थ ले ॥
वन्दना क ग ग य ॥ ॥ म यार्थ ॥ विं कः द्रि मः क ग क म र ल सा
दि ग्री म यार्थ अर्घ्य नमः ॥ य य नमः ॥ ॥ न नि नि य वि वि ॥